या देवी सर्वभूतेषु (चयनित श्लोक)

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

या देवी सर्वभूतेषु (चयनित श्लोक)

प्रकार	स्तुति
देवता	माँ दुर्गा
संस्करण	प्रचलित पाठ
परम्परा	शाक्त
स्रोत	देवी माहात्म्य (दुर्गा सप्तशती), मार्कण्डेय पुराण — Devi Mahatmya, chapter 5 (selected verses, in the order of the text)
आभार	देवी माहात्म्य; सार्वजनिक।

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ।

yā devī sarvabhūteṣu buddhirūpeṇa saṃsthitā |

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

namastasyai namastasyai namastasyai namo namaḥ ||

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।

yā devī sarvabhūteṣu śaktirūpeṇa saṃsthitā |

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

namastasyai namastasyai namastasyai namo namaḥ ||

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ।

yā devī sarvabhūteṣu śāntirūpeṇa saṃsthitā |

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

namastasyai namastasyai namastasyai namo namaḥ ||

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ।

yā devī sarvabhūteṣu śraddhārūpeṇa saṃsthitā |

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

namastasyai namastasyai namastasyai namo namaḥ ||

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ।

yā devī sarvabhūteṣu lakṣmīrūpeṇa saṃsthitā |

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

namastasyai namastasyai namastasyai namo namaḥ ||

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ।

yā devī sarvabhūteṣu dayārūpeṇa saṃsthitā |

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

namastasyai namastasyai namastasyai namo namaḥ ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ।

yā devī sarvabhūteṣu māṭṛrūpeṇa saṃsthitā |

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

namastasyai namastasyai namastasyai namo namaḥ ||

अर्थ

जो देवी सब प्राणियों में बुद्धि रूप से स्थित हैं — उन्हें नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार, बारम्बार नमस्कार। आगे के श्लोक उन्हें शक्ति, शान्ति, श्रद्धा, लक्ष्मी, दया और माता रूप में स्थित मानकर यही नमस्कार दोहराते हैं।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।